देश दर्शन

पूर्ण संख्या—६४

विषय-सूची

स्थिति

स्थित सीमा, तथा विस्तार

मध्यभारत में भूपाल या भोपाल प्रमुख राज्यों में से एक है। भारतवर्ष में हैदराबाद के बाद दूसरा बड़ा मुसलमानी राज्य भूपाल ही है। यह राज्य मालवा के पूर्वी सिरे पर स्थित है। इसके पूर्वी जिले बुन्देलखण्ड को छूते हैं। इसका दक्षिणी भाग गोंडवाना में स्थित है। भूपाल राज्य २२°३२′ और २४°४′ उत्तरी अक्षांशों और ७६°२८′ ७८°५२′ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ६६०२ वर्ग मील है। भूपाल के उत्तर में ग्वालियर बासोदा, कर्वई, मकसूदनगढ़, नरसिंहगढ़ के राज्य हैं। इसी ओर टोंक राज्य कासिरोंज परगना और मध्यप्रान्त का सागर जिला है। दक्षिण की ओर नर्मदा नदी इसे मध्यप्रान्त के होशङ्गाबाद जिले से अलग करती है। इसके पूर्व में सागर जिला और पश्चिम में ग्वालियर और नरसिंहगढ़ राज्य है। कहते हैं यहां राजा भोज के एक मन्त्री ने पानी को रोकने के लिये बांध बनवाया था। इसी से इसका नाम भोजपाल या भूपाल पड़ गया।

सूचना

भूपाल राज्य का अधिकार (४०४७ वर्गमील) भाग मालवा पठार में स्थित है। यहां लहरदार ऊँचा मैदान है। यह प्रायः घास से ढका रहता है। बीच बीच में काली रेगर मिट्टी के उपजाऊ खेत हैं। दक्षिण-पूर्व की ओर बलुआ पत्थर की पहाड़ियाँ हैं। यह विन्ध्याचल के अङ्ग हैं भूपाल शहर के पश्चिम में विन्ध्याचल की एक शाखा उत्तर की ओर चली गई है। दक्षिण की ओर विन्ध्याचल की प्रधान श्रेणी है। इसी ओर कुछ अधिक आगे नर्मदा की उपजाऊ घाटी है। इस राज्य के २८५५ वर्गमील में पर्वतीय प्रदेश है। इस प्रकार इस राज्य के ४,०४७ वर्गमील में पठार और २,८५५ वर्गमील में पर्वत है। पठार अधिक उपजाऊ है। यहां खेतों में गेहूँ, ज्वार, मक्का, धान और पोस्ता की फसलें होती हैं। पहाड़ियाँ जङ्गलों से ढकी हैं। इनकी तलहटी में कहीं कहीं उपजाऊ भूमि है।

पर्वतीय प्रदेश में विन्ध्याचल की श्रेणी प्रधान है। प्रधान श्रेणी से असंख्य पहाड़ियाँ इधर उधर निकली हुई हैं। प्राचीन समय में इसे विन्ध्यादियारिच पर्वत कहते थे। यह पर्वत श्रेणी राज्य के दक्षिणी भाग में

स्थित है। इसकी औसत ऊँचाई १,८०० से २,००० फुट तक है। केवल कुछ चोटियां इससे अधिक ऊँची हैं भूपाल शहर के पास सिंगारचोला की ऊँचाई २,०५१ फुट है। जहां रेलवे लाइन विन्ध्याचल को पार करती है वहाँ एक चोटी की ऊँचाई २१३७ फुट है। विन्ध्याचल का जो भाग भूपाल राज्य में स्थित है वह प्रायः पारियात्र कहलाता था। आर्य यात्रियों की यहीं दक्षिणी सीमा थी। यह मध्य देश को दक्षिणी भारत से प्रथक करता था। यहां ऋषि लोग तपस्या करने को आते थे। कहते हैं पहले विन्ध्याचल हिमालय से अधिक बड़ा था। एक बार अगस्त्य मुनि दक्षिण की ओर आये उनकी आज्ञा से विन्ध्याचल ने अपना सिर नीचा कर लिया। अगस्त्य मुनि दक्षिण से फिर नहीं लौटे अतः विन्ध्याचल अपना सिर नीचा किये पड़ा है। जहाँ विन्ध्याचल पूर्व की ओर भूपाल राज्य में प्रवेश करता है वहां यह बलुआ पत्थर का बना है। गिन्नूरगढ़ के पश्चिम की ओर विन्ध्याचल के ऊपरी भाग में लावा की तहें ऊपर बिछी हुई हैं। बलुई चट्टानें नीचे छिप गई हैं। विन्ध्याचल के कुछ ढाल एक दम सपाट हैं। कहीं कहीं पर पानी ने उसे काट दिया है।

विन्ध्याचल का बलुआ पत्थर घर बनाने के लिये बड़ा अच्छा है और सदियों से इस काम में आता है। विन्ध्याचल के कुछ ढाल जङ्गलों से ढके हैं उनका दृश्य बड़ा ही सुन्दर है। विन्ध्याचल इस राज्य में जल विभाजक बनाता है। उत्तर की ओर बहने वाली नदियों में बेतवा और पार्वती प्रधान है। इनको छोटी छोटी सहायक नदियां बहुत हैं।

बेतवा मध्यभारत की बड़ी नदियों में से एक है। प्राचीन समय में यह वेत्रवती कहलाती थी कालिदास ने मेघदूत में इस प्रकार उल्लेख किया है। "विदिशा को जाते समय तुम वेत्रवती का मीठा जल पिओगे। इस नदी के तट से जो सुन्दर शब्द सुनाई देता रहता है उससे इसका जल और भी अधिक स्वादिष्ट हो गया है। यह वेत्रवती कुमारी गाँव के पास ताळ तहसील में भोजपुर के पास निकली है। इस राज्य में ५० मील तक बेतवा नदी उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। इस राज्य में कहीं भी बड़ी नदी नहीं मालूम होती है। भोजपुर के पास इसमें कालियासोत मिळता है। इनके मिलने से

ताल झील बनती है। कुहू, मनिआरी, गुनी और केर्वा दूसरी सहायक नदियाँ हैं।

(पश्चिम में) पर्वती नदी बुराना खेरी गाँव में अष्टा के पास से निकलती है। यह इस राज्य में ६० मील बहती है। और अपने अधिकांश मार्ग में राज्य की पश्चिमी सीमा बनाती है। अजनाल पापनाश और पारुआ इसकी सहायक नदियाँ हैं।

इस राज्य की दूसरी नदियाँ दक्षिण की ओर बहती हैं और नर्मदा में मिल जाती हैं। नर्मदा नदी १२५ मील तक इस राज्य की दक्षिणी सीमा बनाती है। इस ओर नर्मदा में बहुत जल रहता है। वर्ष में वह कभी नहीं सूखती है। कुछ दूर तक इसमें नावें चला करती हैं। सिन्दोर खांड, घोगरा, तेंदोनी, वार्ना, दोबी, बागनेर, भाभर, कोलार, हम्बर, अजनाल, गोनी और जामनेर नर्मदा की प्रधान सहायक नदियाँ हैं।

भूगर्भ

भूपाल राज्य में कई युगों और कई प्रकार की चट्टानें हैं। गिन्नूरगढ़ की पहाड़ी के आगे विन्ध्याचल

का अधिकतर भाग लावा की तहों से ढका है। इसकी दिशा उत्तर-पश्चिम की ओर हो गई है। भोपाल शहर के पूर्व और दक्षिण-पूर्व की ओर बलुआ पत्थर प्रधान है। कैमूर का बलुआ पत्थर बहुत कुछ निकाला जा चुका है। इस पत्थर पर बढ़िया गढ़ाई होती है। इन्दौर राज्य में नेमावर का प्रसिद्ध मन्दिर इसी पत्थर का बना है। गिन्नूरगढ़ के चूने के पत्थर से चूना बनाने का प्रयत्न तो नहीं किया गया। लेकिन यहाँ चूने का पत्थर बहुत है। नर्मदा के कंकड़ से चूना बहुत बनाया जाता है। गिन्नूरगढ़ के पास चूने के पत्थर को तह १०० फुट से अधिक मोटी है। पर पूर्व की ओर यह लुप्त हो गई है। लावा की तहें भिन्न-भिन्न समयों पर उमड़ कर चट्टानों के ऊपर बिछ गई हैं। अतः उनकी मुटाई में अन्तर है।

इस राज्य में कई प्रकार के प्राचीन पशुओं के प्रस्तरी भूत ढाँचे (फासिले) मिलते हैं।

———

जलवायु

भूपाल राज्य की जलवायु शीतोष्ण है। पहाड़ी प्रदेश और नर्मदा की घाटी की जलवायु अधिक विषम है। राज्य के कुछ भागों में ३० इंच वर्षा होती है। कुछ भागों में ४० इंच वर्षा होती है। भूपाल शहर के पड़ोस में ५० इंच वर्षा होती है। एक बार यहाँ ६५ इंच वर्षा हुई। लेकिन २४ इंच से कम वर्षा यहाँ कभी नहीं हुई।

पन्द्रहवीं शताब्दी में भोजपुर झील के नष्ट हो जाने से यहाँ की जलवायु कुछ बिगड़ गई। झील के २५० मील तल के ऊपर से जो हवायें उत्तर की ओर पठार पर जाती थीं वे वहाँ की जलवायु को सम शीतोष्ण रखती थीं और वर्षा की मात्रा कुछ बढ़ा देती थीं।

वनस्पति और पशु

बलुआ पत्थर के प्रदेश की वनस्पति लावा प्रदेश की वनस्पति से एक दम भिन्न है। बलुआ पत्थर वाले प्रदेश में जङ्गल अधिक घना है। यहाँ टीक या सागौन और तेंदू के पेड़ बहुत हैं। लावा प्रदेश में ढाक और

दूसरी झाड़ियों की अधिकता है। इस राज्य में छोटे मुरझाये हुये काँटेदार पेड़ों की भरमार है।

इस राज्य के बन में जङ्गली पशुओं को छिपने के लिये स्थान बहुत है। चीता तदुआ और साँभर सब कहीं पाये जाते हैं। छोटे छोटे काले चितकबरे हिरण भी बहुत हैं। पहले यहाँ जङ्गली भैंसे भी बहुत थे। अब यह नष्ट हो गये हैं। भारतवर्ष में पाई जाने वाली सभी चिड़ियाँ यहां मिलती हैं। खंजन आदि कुछ चिड़ियाँ सरदी की ऋतु में यहाँ आ जाती हैं। नदियों में महसर, रोहू आदि मछलियाँ बहुत हैं। यहाँ कई प्रकार के साँप पाये जाते हैं।

कृषि

राज्य के भिन्न भिन्न भागों में भिन्न प्रकार की मिट्टी है। पश्चिमी भाग में बड़ी उपजाऊ भूमि है। दक्षिण की ओर ताल जिले में भी उपजाऊ भूमि है। वर्षा भी सब भागों में समान नहीं है। भूपाल शहर के पड़ोस में पहाड़ियों पर ५० इंच से ऊपर वर्षा हो जाती है।

मूरन, मोरँड, मोर और मलैत मिट्टी काली और उपजाऊ होती है। भीगने पर यह मुलायम और चिकनी होती है। सूख जाने पर यह कड़ी हो जाती है और इसमें दरारें पड़ जाती हैं। इसमें पानी भली भाँति भिद् जाता है। अतः यह बहुत समय तक गीली रहती है। यह मिट्टी गेहूँ चना और मसूर की खेती के लिये बड़ी अच्छी होती है। पहाड़ी ढालों की काली मिट्टी (कालमट) में बालू के मोटे कण अधिक मिले रहते हैं। इसका रंग भी कुछ हलका होता है। भावर मिट्टी कुछ भूरे रंग की होती है। यह कपास गेहूँ अलसी और ज्वार के लिये अच्छी होती है। दोमट या दोमटियाँ में कालम और भाँवर का मिश्रण होता है। सूखने पर इसमें दरारें नहीं पड़ती हैं। इसमें कुछ बालू भी मिली रहती है। सियारी मिट्टी कुछ पीली अथवा लाल रंग की होती है। सूखने पर इसमें दरारें नहीं पड़ती हैं। सिंचाई हो जाने पर इसमें धान उगता है। इसमें तिल्ली और ज्वार भी अच्छी होती है। यह मिट्टी अधिक गहरी नहीं होती है न यह अधिक समय तक नमी रख सकती है। पिलूटा (पीली) मिट्टी भी अधिक गहरी नहीं होती है। पिलूटा मिट्टी में छोटे

छोटे कंकड़ रहते हैं। यह पहाड़ी ढालों पर पाई जाती है। यह कुछ पीली या भूरी होती है। इसमें केवल ख़रीफ फसल होतो है। भटत्रा मिट्टो भो पहाड़ी ढालों पर होती है यह भी लाल या पीली होती है। यह प्रायः बलुई होती है। यह एक फुट से अधिक गहरी नहीं होती है। यह कोदों, तिल और मकई के लिये अनुकूल होती है। कछार या चाप मिट्टी नदियों के किनारों के पास होती है। यह बड़ी उपजाऊ होती है। इसमें गेहूँ, ज्वार और तरह तरह की तरकारियाँ होती हैं। खरीफ की फसल में यहाँ ज्वार बाजरा, मकई कोदों और अरहर की फसलें होती हैं। रबी की फसल में गेहूँ, चना, जौ और पोस्ता (अफीम) प्रधान है। ख़रीफ की फसलों से लोगों को भोजन मिलता है। रबी की फसल अधिक मूल्यवान होती है। औसत से इस राज्य की २६ फी सदी। (प्रायः १८०० वर्ग मील) भूमि में खेती होती है।

व्यापार

रेल के खुल जाने से इस राज्य का व्यापार अधिक

बढ़ गया है। जो लोग व्यापार में लगे हैं उनके पास किसानों की अपेक्षा अधिक धन है। इस राज्य से गेहूँ चना, सरसों, अलसी, तिल, पोस्ता, अफीम, कपास, घी, सूखी, घास, चिरौंजी, गोंद, लाख, इमली, चमड़ा, हड्डी, खारवां कपड़ा, सरोते, शहद, मूस्ली, मोम और इमारती लकड़ी बाहर भेजी जाती है। मिट्टी का तेल, शक्कर, नमक, नारियल, सुपारी, कत्था, तम्बाकू, कंघी, पिन, सुई, चाकू, कागज, कलम, अँग्रेज़ी जूते, टोपी, छाता, कपड़ा, दियासलाई और केला आदि फल बाहर से आते हैं।

गेहूँ, चना, अरहर, अल्सी, तिल, पोस्ता, अफीम, सरसों, कपास, सींग, चमड़ा, हड्डी, घी और शहद बम्बई को भेजा जाता है। मोम और मुसली दिल्ली को जाती है। शहद गुजरात को लाख और गोंद मिर्जापुर को जाता है। सींग और चमड़ा कानपुर और मद्रास को जाता है। कंघी इन्दौर और जबलपुर को भेजी जाती है। खरबूजा, तरबूज़ कलकत्ता, बम्बई, इन्दौर और उज्जैन को भेजे जाते हैं। चिरौंजी और धनिया कानपुर को जाता है। गुटका इमारती लकड़ी और बांस भिन्न-भिन्न भागों को भेजे जाते हैं।

बारीक नमक पचभद्रा (राजपूताना) से और काला नमक पञ्जाब से आता है। कपड़ा, मसाला, साबुन, ताँबा, टीन, पीतल और लोहे की चद्दरें, बर्तन चाकू, छूरे, घड़ियां, चेन, मेज़ आदि रस्से नारियल, जटा, मिट्टी का तेल, ऊन, चाय, टोपी, फल, दियासलाई, कागज़, शक्कर, गन्धक और अन्य कई वस्तुएँ बम्बई से आती हैं। जरदा (तम्बाकू) गुजरात, कन्नौज और फर्रु-खाबाद से आती है। बम्बई से बहुत सा माल योरुप से आता है। जो माल यहाँ से बम्बई को भेजा जाता है वह प्रायः बाहर जाता है।

माल लाने और ले जाने के लिये रेलवे लाइनों से बड़ी सहायता मिलती है। ग्रेट इण्डियन पेनिन्सुला रेलवे इस राज्य में ७३ मील चलती है। बुदनी, मिदघाट, बरखेरा, हिरानिया, दीप, मिस्रोद, भूपाल, सुखी सिवानिया, गुल गांव, सलामतपुर और साँची इस लाइन के स्टेशन हैं। भूपाल उज्जैन शाखा लाइन उज्जैन नगर में इस लाइन को बम्बई, बड़ौदा और सेण्ट्रल इण्डिया रेलवे लाइन से मिलती है। इस राज्य में इस शाखा लाइन की लम्बाई ३२ मील है। भूपाल,

बेरागढ़, फन्दा और सीहोर इसके स्टेशन हैं। १८८५ ई० में दरबार ने भूपाल से इटारसी तक रेलवे लाइन बनने के लिये ५० लाख रुपया दिया। यह भूपाल स्टेट रेलवे कहलाती है। भूपाल उज्जैन लाइन के बनने में इस राज्य ने २२ लाख ८० हज़ार रुपया दिया। शेष रुपया ग्वालियर राज्य ने दिया। प्राचीन समय में इस राज्य में होकर कई राज्य मार्ग जाते थे। ईसा से पूर्व बौद्ध काल में एक मार्ग दक्षिण में पैथन से आता था और महेश्वर तथा उज्जैन हो कर भिल्सा को जाता था। इसकी एक मंजिल गोनध में थी। गोनध को आजकल दोराहा कहते हैं। जहां दोराह (मार्ग) मिलते हैं। एक मार्ग दक्षिण से और दूसरा उज्जैन से आकर यहाँ मिलता है। मुगलकाल में दक्षिण से आने वाला प्रधान मार्ग हंडिया, टीकरी, तुल्मेदन, नयासराय, इछावर, सीहोर, शेखपुरा, दोराहा, हटियाखेरा, दिलोद, संगखेरा और (टोंक राज्य के) सिरोंज हो कर जाता था। आज पक्की सड़कों में एक भूपाल, सीहोर सड़क है। यह २६ मील लम्बी है। राज्य से बाहर आगे चल कर यह

देवास और इन्दौर को चली गई है। इस राज्य में यह सड़क २१ मील लम्बी है। शाखा सड़कें श्यामपुर और हिंगनोई को गई है। यह २६ मील लम्बी है। इसके आगे यह नरसिंहगढ़ को गई है। भूपाल होशंगाबाद सड़क ४५ मील लम्बी है। रेलवे के खुल जाने से इस सड़क की दशा बिगड़ गई। भोपाल से एक शाखा सड़क इस्लामनगर (५ मील) और आगे चल कर बेरासिया (२१ मील) को गई है। एक सड़क सलामतपुर से रैसेन (१२½) को गई है। भूपाल से और भी कई छोटी सड़कें गई हैं। इस राज्य में समस्त पक्की सड़कें १६१ मील से कुछ ऊपर हैं।

देहातों में बैल गाड़ियाँ चलती हैं। शहर में टाँगा चलते हैं। बड़े बड़े अफसर मोटरों पर चलते हैं।

जनसंख्या

भूपाल राज्य की जनसंख्या लगभग ७ लाख है। औसत से प्रति वर्ग मील में प्रायः १०० मनुष्य रहते हैं। यहाँ के लोग प्रायः अकाल से पीड़ित रहते हैं।

भूपाल-दर्शन

१८९१ ई० में यहाँ की जनसंख्या प्रायः १० लाख थी। १९०१ में लगभग साढ़े छः लाख रह गई। प्रायः प्रत्येक गाँव में उजड़े हुये घर मिलेंगे। प्रायः १७ फीसदी लोग नगरों में रहते हैं। शेष गाँवों में रहते हैं। भूपाल (८०,०००) सीहोर (१७.०००) जिसमें सीहोर छावनी भी शामिल है जो ब्रिटिश अधिकार में है। अष्टा (५५००) इछावर (४०००) और बेरासिया (४२७६) पाँच नगर हैं। इस राज्य में ३०७३ गाँव हैं। इनमें २८७८ गाँव ऐसे हैं जिनमें प्रत्येक की जनसंख्या ५०० से कम है। इस राज्य में ८७ फीसदी हिन्दू हैं। जिनमें १४ फीसदी गोंड भी शामिल हैं। १३ फीसदी मुसलमान हैं। अधिकतर मुसलमान भूपाल शहर में रहते हैं इस राज्य के केवल ४ फीसदी लोग पढ़ लिख सकते हैं। भूपाल राज्य की भाषा उर्दू है इसी में कचहरी और सरकारी विभागों का काम होता है। जनता की भाषा हिन्दी है। इस राज्य में अधिकतर जमींदार क्षत्रिय और ब्राह्मण हैं। लोधी, खाती, काछी और कुरमी खेती करते हैं। राज्य के लोगों का प्रधान पेशा खेती है। किसान लोग मोटी धोती और मिरजई या

खंडी पहनते हैं। पूर्वी भाग में सिर पर साफा और पश्चिमी भाग में पगड़ी पहनते हैं। दोनों भागों में बुन्देलखंडी देशी जूता पहना जाता है। धनी लोग बढ़िया धोती, कुरता, अंगरखा पाजामा या रंगीन पगड़ी पहनते हैं। वृद्ध लोग कन्धे पर डुपट्टा डाल लेते हैं। नई उम्र के लोग अंग्रेज़ी ढंग की कमीज़ और टोपी पहनते हैं। वे अंग्रेज़ी जूता पहनते हैं और अंग्रेज़ी ढंग के बाल रखते हैं। भूपाल शहर में हिन्दू और मुसलमानों के पहनावे में बहुत कम अन्तर दिखाई देता है। स्त्रियाँ रंगीन लहंगा और चोली पहनती हैं। सिर और कन्धों के ऊपर वे ओढ़नी ओढ़ती हैं। पूर्वी भाग की स्त्रियाँ सारी पहनती हैं।

यहाँ के लोग दिन में प्रायः दो बार भोजन करते हैं। पहला भोजन दोपहर को होता है। दूसरी बार रात्रि में भोजन किया जाता है। धनी लोग गेहूँ की चपाती दाल भात, घी दूध शक्कर मिठाई और शाक का भोजन करते हैं। ब्राह्मण और वैश्य मांस का कभी सेवन नहीं करते हैं। भील और गोंड मक्का ज्वार और जङ्गली जड़ी खाते हैं। उन्हें महुआ (के फल) बहुत प्रिय

लगता है। किसानों के घर प्रायः कच्चे होते हैं। दरवाज़े बाँस के बने होते हैं। घर प्रायः खपरैल या छप्पर से छाये जाते हैं। जहां पत्थर की अधिकता है वहाँ घर पत्थर के बने होते हैं। भूपाल शहर में अफसरों और धनी लोगों के घर योरुपीय ढंग से बने हैं। कुछ घर दोमंजिला है। उनमें बढ़िया कामदार छज्जे लगे हुए हैं।

संक्षिप्त-इतिहास

भूपाल प्राचीन समय में चेदि राज्य का अंग था। बौद्ध काल में सांची इसका प्रधान केन्द्र था। पर भूपाल राज्य का वर्तमान इतिहास अठारहवीं शताब्दी से आरम्भ होता है। वजीरिस्तान के मिरजई खेल के दोस्तमुहम्द नामी एक अफगान का मालवा में बेरासिया का परगना मिल गया। दोस्तमुहम्मद का पिता नूर मुहम्मद भी १६९६-९७ ई० (औरङ्गज़ेब के शासन काल) में भारतवर्ष में उसके साथ आया था। दोस्त मुहम्मद पहले मुज़फ़्फ़रनगर के जलालाबाद कस्बे में गया जहाँ उसके कबीले के कुछ लोग बस गये थे। आने

के कुछ ही समय के पश्चात् दोस्तमुहम्मद ने एक मनुष्य को मार डाला। उसे पकड़े जाने का डर लगा। अतः वह जलालाबाद से भाग कर दिल्ली को आया। यहाँ मराहठों पर आक्रमण करने के लिये तैयार की जा रही थी। दोस्तमुहम्मद इसी सेना में भरती होकर मालवा में पहुंचा। यहाँ उसने सीतामऊ के राजा के यहाँ नौकरी कर ली। फिर उसने भिल्सा के सूबेदार मुहम्मद फारूक के यहाँ अपना सामान रख दिया और मालवा में ऊँची नौकरी पाने के लिये असंख्य छोटे छोटे राजपूत सरदारों के दरबारों का चक्कर लगाया। मङ्गलगढ़ के ठाकुर आनन्दसिंह सोलंकी के यहाँ उसे नौकरी मिल गई। ठाकुर साहब को अपना राज्य छोड़ कर दिल्ली जाना पड़ा। वहाँ उनकी मृत्यु हो गई। कुछ दिनों में उनकी माता का भी स्वर्गवास हो गया। दोस्तमुहम्मद ने ठाकुर साहब के हीरा जवाहिरात हड़प करके बेरासिया को प्रस्थान किया। दोस्तमुहम्मद ने ३०,००० रुपये में बेरासिया का जिला मोल ले लिया। अपनी स्थिति दृढ़ कर के उसने उन राजपूतों के किलेबन्द नगर जगदीशपुर पर चढ़ाई की। पर उसने मित्रता भाव

प्रगट करके उन्हें एक भोज में बुलाया। इसी समय उसने उन पर अचानक छापा मारा और मार डाला। इस प्रकार उसने जगदीशपुर छीन लिया और इसका नाम बदल कर इस्लामनगर रख दिया। राजपूतों की लाशें पास की नदी में डाल दी गईं। उसका नाम हलालीवादी पड़ गया। दोस्तमुहम्मद ने इस्लाम नगर में एक किला बनवाया और यहीं उसने अपनी राजधानी बनाई। फिर उसने भिल्सा पर चढ़ाई करने के लिये एक सेना भेजी। जमल्दर और बागरी गाँवों के बीच में भिल्सा के पास लड़ाई हुई। दोस्तमुहम्मद का सेनापति मारा गया और उसकी सेना में गड़बड़ी मच गई। लेकिन दोस्तमुहम्मद स्वयं पहाड़ियों में छिपा हुआ था। उसने भिल्सा के सूबेदार मुहम्मद फारूक़ को अचानक घेर लिया और मार डाला। फिर दोस्त मुहम्मद अपने मृत विरोधी मुहम्मद फारूक़ के हाथी पर सवार हो गया। उसने ढोल बजाने वालों को ढोल बजाने के लिये बाध्य किया। इस प्रकार बाजा गाजे के साथ वह भिल्सा में पहुँचा। यहाँ के पहरेदारों ने उसे अपना सूबेदार विजयी फारूक़ समझ कर किले के फाटक खोल दिये। भिल्सा पर अधिकार हो जाने से

दोस्तमुहम्मद ने कुछ ही समय में ग्यारसपुर, दोगाहा, साहोर, इछावर, देवीपुर, गुल गाँव और अन्य स्थानों पर अधिकार कर लिया। १७१६ ई० में दोस्त मुहम्मद (निज़ाम से बिगाड़ होने पर) कोटा के राजा भीमसिंह हार से मिल गया। राजा भीमसिंह इस समय बूँदी के राव राजा बुद्धसिंह पर अक्रमण कर रहा था। दिलावर खाँ और नरवर के राजा गज सिंह ने इसका साथ दिया। बन्दी नरेश बुद्धू सिंह की हार हुई। कोटा के राजा ने चम्बल के पूर्व में बूँदी राज्य के सब भाग छीन लिये।

मालवा के सूबेदार गिरधर बहादुर ने इन दोनों की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने का प्रयत्न किया। लेकिन उसकी हार हुई। शुजालपुर के सूबेदार ने अपना जिला दोस्त मुहम्मद को दे दिया। १७२२ ई० में कोर्वई के जागीरदार दिलेर खाँ को दोस्त मुहम्मद ने मार डाला। इसके पश्चात् दोस्त मुहम्मद ने गिन्नूरगढ़ पर अधिकार कर लिया। गिन्नूरगढ़ में गोंड राजा निज़ामशाह राज्य करता था। चैनपुर बारी के राजा ने उसे मरवा डाला। विधवा रानी ने दोस्तमुहम्मद से सहायता माँगी। दोस्त

मुहम्मद ने चैनपुर बारी के राजा पर आक्रमण कर के उसके राज्य को छीन लिया। कुछ समय के पश्चात् दोस्त मुहम्मद ने गिन्नूरगढ़ का किला भी छीन लिया।

१७२२ ई० में दोस्त मुहम्मद ने भूपाल में फतेह गढ़ (किले) की नींव डाली और नवाब की उपाधि धारण कर ली।

१७२३ ई० में निज़ाम (हैदराबाद) ने भूपाल पर चढ़ाई की और इस्लाम नगर के किले के पास निज़ाम की टेकरी स्थान पर पड़ाव डाला। दोस्त मुहम्मद निज़ाम का सामना करने में असमर्थ था। अतः उसने अपना बेटा यार मुहम्मद निज़ाम को सौंप दिया इस पर निज़ाम दिल्ली चला गया।

१७२६ ई० में ६६ वर्ष की उम्र में दोस्त मुहम्मद का देहान्त हो गया। उसका मकबरा बाला किला के पास बना हुआ है।

उसके छः बेटे थे। उसके मरने पर मन्त्रियों ने उसके आठ वर्ष के एक बेटे सुल्तान मुहम्मद को भूपाल की गद्दी पर बिठाया। लेकिन निज़ाम ने (नाजायज) बेटे यार मुहम्मद का पक्ष ले कर उसे गद्दी पर बिठाया।

यार मुहम्मद ने उदयपुर (जो अब ग्वालियर राज्य में है) सेवांस और पठारी को जीत लिया, १५ वर्ष राज्य करने के पश्चात् १७४२ ई० में वह इस्लाम नगर में (जहां उसने अपनी राजधानी बनाई थी) मर गया और वहीं गाड़ा गया। उसके पांच बेटे थे। उसका एक बेटा (११ वर्ष की उम्र का) फैज मुहम्मद गद्दी पर बैठा। उसके चाचा सुल्तान मुहम्मद ने गद्दी पर बैठने का प्रयत्न किया। पर फ़ैज़ मुहम्मद के मन्त्री विजय राम ने बड़ी वीरता दिखलाई। उसने भूपाल के किले पर अधिकार कर लिया। सुल्तान मुहम्मद राहतगढ़ को चला गया। अन्त में ममोला बीबी (यार मुहम्मद की विधवा स्त्री) ने सुल्तान मुहम्मद को एक छोटी सी जागीर दिला कर सन्धि करवा दी।

१७४५ ई० में मरहठों ने भूपाल में प्रवेश किया। उन्होंने अष्टा, देवीपुर, दोराहा, इछावर, भिल्सा शुजालपुर और सीहोर पर अधिकार कर लिया। पानीपत की लड़ाई के पश्चात् कुछ वर्षों तक भूपाल में शान्ति रही १७६२ ई० में दीवान विजयराम की मृत्यु हो गई। दीवान विजयराम के उत्तराधिकारी घासी राम ने इस

राज्य में गौ हत्या बन्द करवा दी। उसने हिन्दुओं का पक्ष लिया और पठानों को सताया अन्त में दो पठानों ने उसे मार डाला। फिर गैरत खां दीवान हुआ। कुछ वर्षों के बाद दरबारियों ने विष दे कर मार डाला। फिर लालकेमरो नाम का एक कायस्थ दीवान हुआ। उसने १४ वर्ष तक योग्यता पूर्वक शासन किया। लेकिन पठानों ने उसे भी मरवा डाला। १७७७ ई० में विशालकाय (प्रायः ७ फुट ऊँचे) नवाब की मृत्यु हो गई। उसके कोई बेटा न था। अतः उसका भाई हयात मुहम्मद गद्दी पर बैठा। उसने एक गोंड और ३ अन्य हिन्दू लड़कों को मुसलमान बनाया। उसने गोंड लड़के (जिसका नाम फौलाद खां रक्खा गया) को अपना मन्त्री बनाया। इसी समय अँग्रेज़ों और मरहठों की पहली लड़ाई हुई कर्नल गोडार्ड एक सेना लेकर कलकत्ते से बम्बई को गया था। वह भूपाल राज्य में होकर गया था। भिल्सा, खेमलासा, भूपाल और होशंगाबाद उसके मार्ग में पड़े थे। नवाब ने कम्पिनी को पूरे मनसे सहायता दी। १७८० ई० में फौलाद खां मार डाला गया। उसके स्थान पर छोटे खां (जो पहले ब्राह्मण था) मन्त्री बना। छोटे खाँ ने पुख्ता (पत्थर

का) पुल बनवाया। १७९५ ई० में छोटे खां की मृत्यु हो गई। इसी वर्ष हाशंगाबाद का किला जो इस समय भूपाल राज्य में शामिल था नागपुर के रघु जी भोंसला ने छीन लिया। इसके बाद इस राज्य में कई वर्षों तक अराजकता फैली रही। एक पक्ष ने सिन्धिया के सूबेदार बालराव इंगलिया से सहायता मांगी। रायसेन का किला मरहठों को दे दिया गया बालराव ४०,००० सिपाही लेकर शहर के समीप पहुँचा। वह गोविन्दपुरा में ठहरा। जहां इस समय एशफरहत है वहां घमासान लड़ाई हुई। मरहठे जीत जाते लेकिन १७९८ में सिन्धिया ने अपनी सेना बुला ली। बालाराव ने मुरीद को कैद कर लिया और उसने आत्म हत्या कर ली। मुराद से लोग इतनी घृणा करते थे कि उसकी कब्र पर भी लोग जूते की ठोकर लगाते थे। १७९८ ई० में वजीर ने ३०,००० रुपये देकर रैसीन का किला मरहठों से वापिस ले लिया। उसने सूबेदार को रिश्वत देकर होशङ्गाबाद का किला भी ले लिया लेकिन जब नागपुर के भोंसला राजा ने सेना भेजी तब भोपाली सेना गिन्नूरगढ़ को लौट आई और भोंसला के सेनापति सखाराम बापू ने होशंगाबाद

पर फिर अधिकार कर लिया। मरहठों का सामना करने के लिये भूपाली वजीर ने पिंडारी सरदार करीम खाँ और चोतू से मित्रता कर ली। चीतू को छिपाते रहने के लिये दे दिया गया। इस समय भूपाल राज्य की आय केवल ५०,००० रू० रह गई। १८०६ ई० में भूपाल राज्य में शान्ति स्थापित करने के लिये सिन्धिया से प्रार्थना की गई। इस्लाम नगर का किला, चार लाख रु० नगद और ६१,००० रू० देने का वचन दिया गया। लेकिन सिन्धिया ने कोई हस्ताक्षेप नहीं किया। १८११ में वज़ीर खाँ ने ब्रिटेन से सन्धि करने का प्रयत्न किया। समय पर रूपया न मिलने पर १८१२ ई० में सिन्धिया की सेना ने भूपाल पर चढ़ाई कर दी। नागपुर की सेना ने साथ दिया। पर मरहठा सेनापतियों में मत-भेद होने के कारण कोई सैनिक कार्य न हो सका १८१४ और १८१५ में भूपाल दरबार ने अँग्रेज़ों से सन्धि करने का फिर प्रयत्न किया अन्त में १८१७ ई० में पिंडारी युद्ध भूपाल दरबार से सन्धि कर ली गई। भूपाल ने ५१ लाख का जेवर बेच कर ६०० घुड़सवार और ४०० पैदल सिपाहियों से कम्पिनी की सहायता की।

बदले में इस्लाम नगर का किला (जो सिन्धिया के अधिकार में था) भूपाल राज्य को लौटा दिया गया। पाँच परगने भी दे दिये गये। इस प्रकार भूपाल अँग्रेज़ों का करद राज्य हो गया। इससे पहले सिन्धिया भूपाल को अपना मातहत राज्य समझता था। कुछ समय तक यहाँ बेगम और नये नवाब के बीच में झगड़ा चला। १८३७ ई० में नवाब जहांगीर के हाथ में शक्ति आ गई। १८४४ में उसकी मृत्यु हो गई। मरते समय नवाब की इच्छा थी कि उसकी अविवाहित स्त्री का बेटा दस्तगीर नवाब हो पर ब्रिटिश सरकार ने इसे स्वीकार न किया और १८४५ में उसकी सात वर्ष की बेटी भूपाल की बेगम घोषित की गई। १८५५ में शाहजहां बेगम सेनापति बख्शी। बाकी मुहम्मद खां से ब्याह दी गई। वही नवाब बना। १८५७ के गदर के समय भूपाल दरबार में ब्रिटिश सरकार की बड़ी सहायता की और अपूर्व राजभक्ति दिखलाई। भाग कर यहां आये हुये अँग्रेज़ों को शरण मिलती रही। जब राहतगढ़ के किलादार ने अँग्रेज़ों को नहीं घुसने दिया तो उसकी खाल कढ़वा ली गई। जब सीहोर के सिपाहियों

ने विद्रोह किया तो उनको दबाने के लिये बेगम ने एक सेना भेजी और खजाने की रक्षा की।

शाहजहां बेगम ने बालिग होने पर भी राज्य का शासन भार अपनी माता सिकन्दर बेगम को सौंप दिया। सिकन्दर बेगम १८६१ में वायसराय (लार्ड कैनिंग) से जबलपुर में मिलीं। वायसराय ने उसे उस सहायता के लिये धन्यवाद दिया जो उसने गदर के समय दी थी। इसके साथ ही बेरासिया का जिला धार राज्य से छीन कर भूपाल को भेंट कर दिया गया। भूपाल राज्य ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध कभी हथियार नहीं उठाये थे। नवम्बर मास में इलाहाबाद में दरबार हुआ। इस समय सिकन्दर बेगम को जी० सी० यस० आई की उपाधि मिली। १८६२ में उसे गोद लेने की सनद मिली। १८६४ ई० में उसने मक्का की तीर्थ यात्रा की। १८६८ में उसकी मृत्यु हो गई। वह फरहत अफ़ज़ा बाग में गाड़ी गई। शाहजहां बेगम जो नाम के लिये १८४५ ई० में ही शासक बनी थी अब १८६८ ई० में वह वास्तव में शासक बनी। उसकी बेटी सुल्तान जहां युवराज्ञी घोषित की गई।

शाहजहाँ बेगम ने दूसरी बार मौलवी सैय्यद सिद्दीक हुसेन से ब्याह किया। १८७२ ई० में उसे जी० सी० यस० आई की उपाधि मिली। १८७७ ई० में वह दिल्ली दरबार में सम्मिलित हुई। १८७६ में भूपाल में ओपियम (अफीम की) एजेन्सो स्थापित हुई। १८८० में होशंगाबाद से भूपाल तक आने वाली रेलवे लाइन के बनाने का खर्च देना स्वीकार कर लिया।

१८६१ ई० में भूपाल उज्जैन लाइन के लिये भूमि दी गई। इसी वर्ष नमक कर उठा दिया गया। इसके बदले में ब्रिटिश सरकार ने भूपाल सरकार को १०,००० रुपया वार्षिक देना स्वीकार कर लिया। विवाह के कुछ समय पश्चात् पति से झगड़े होने लगे। १८६० ई० में पति की मृत्यु हो गई। १८६१ ई० में लार्ड लैन्स डाउन भूपाल राज्य में पधारे और भूपाल की बेगम और उसके उत्तराधिकारियों को नज़र देने से मुक्त कर दिया। १८६५ में लार्ड एल्गिन और १८६६ में लार्ड कर्जन यहाँ पधारे। १६ जून १६०१ ई० को

शाहजहाँ बेगम की मृत्यु हो गई। सुलतान जहां भूपाल की बेगम बनी। १६०२ में उसका पति मर गया। १६०४ ई० में सुल्तान जहां ने मक्का की तीर्थ यात्रा की। १६०५ में उसने इन्दौर में प्रिन्स आफ़ वेल्स से भेंट की और जी० सी० आई० ई० की उपाधि प्राप्त की। उसने प्रजा के हित के लिये कई कार्य किये उसके मरने पर उसका बड़ा बेटा मुहम्मद नसरूल्लाह खां भूपाल का नवाब हुआ।

शासन प्रवन्ध

भूपाल राज्य में ३ निज़ामतें हैं प्रत्येक निज़ामत में ६ तहसीलें हैं। निज़ामते मशरिक या पूर्वी ज़िला उत्तर-पूर्व में सागर ज़िले से घिरा है। शेष भागों में राज्य के दूसरे ज़िले इसकी सीमा बनाते हैं। इस ज़िले की भूमि प्रायः समतल है। पूर्व और दक्षिण की ओर विन्ध्याचल की पहाड़ियाँ हैं। अम्बा पानी और तोरिया जसर्ती के पास सब से ऊँची चोटियां हैं। बेतवा बैन,

बीना और तन्दोनी इस जिले की नदियां हैं। इस ज़िले के पहाड़ी भाग में कई स्थानों से बलुआ पत्थर निकाला जाता है। कहीं कहीं चूने का पत्थर भी पाया जाता है।

इस ज़िले का इतिहास वास्तव में मालवा का इतिहास है। रैसेन का किला इस जिले में बहुत पुराना है। १२३५ में रैसेन और भिल्सा के किले अल्तमश के हाथ आ गये। १२९३ में इन पर अलाउद्दीन का अधिकार हो गया। मालवा पन्द्रहवीं शताब्दी में सुल्तान यहाँ शासन करने लगे। सुल्तान महमूद के समय से यहां राजपूतों की शक्ति बढ़ने लगी। उदयपुर के राना और गुजरात के बहादुर शाह ने जब मालवा पर आक्रमण किये तब तो यहां के राजपूत और अधिक बलवान हो गये। जब मालवा के सुल्तान ने उनकी शक्ति नष्ट करने का प्रयत्न किया तो वे राना की ओर हो गये और सुल्तान उनका कुछ न बिगाड़ सका। १५३१ ई० में महमूद हारा और गुजरात के बहादुर शाह का मालवा पर अधिकार हो गया। उज्जैन नगर, भिल्सा का परगना (जिसमें रैसेन

का किला भी शामिल था) और अष्टा परगना गहलोट राजपूत के हाथ में आ गये। पर कुछ समय के पश्चात् बहादुरशाह ने यहां फिर आक्रमण किया और कई स्थानों को ले लिया। बाबर इधर आया था। यदि हुमायूँ पूर्वी भाग में हार न जाता तो वह इस प्रदेश पर अधिकार कर लेता। अन्त में शेरशाह ने रैसेन का किला और यह भाग राजपूतों से छीन लिया। अकबर के समय में रैसेन मालवा प्रान्त की एक सरकार की राजधानी बनी। रैसेन भारतवर्ष के प्रसिद्ध किलों में से एक था। अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में दोस्त मुहम्मद खां ने मालवा के सूबेदार को भगा कर इस भाग पर अपना अधिकार कर लिया। १७४५ ई० में भूपाल राज्य के अधिकतर भाग पर पेशवा का अधिकार हो गया। १८१७ ई० के बाद इस राज्य में बराबर शान्ति रही। रैसेन इस्लाम नगर और सांची इस जिले के प्रधान नगर हैं।

निज़ामत मग़रिब या पश्चिमी जिला उत्तर की ओर ग्वालियर और नरसिंह गढ़ राज्यों से घिरा हुआ है। इसके दक्षिण में ग्वालियर और इन्दौर राज्य हैं। इसे

ज़िले के दक्षिणी भाग में पहाड़ हैं। पार्वती नदी इसकी पश्चिमी सीमा पर बहती है। बेरासिया में बान दोराहा में बस बिल्किसगंज में कोलास और सीहोर में लोटरा और सीवान नदियां बहती हैं। इस ज़िले के अधिकतर भाग में लावा की मिट्टी है। कई स्थानों से पत्थर निकाला जाता है।

निज़ामते जनूब या दक्षिणी जिला दक्षिण की ओर नर्मदा नदी से घिरा हुआ है जो इसे होशङ्गाबाद ज़िले से अलग करती है। शेष ओर राज्य के दूसरे ज़िले हैं। विन्ध्याचल के ऊपर का भाग घाट ऊपर और नीचे का भाग घाट नीचे कहलाता है नर्मदा, बरूआ, और बेतवा इस ज़िले की नदियां हैं। पूर्व की ओर विन्ध्याचल की पहाड़ियां बलुआ पत्थर की बनी हैं। पश्चिम की ओर उनके ऊपर लावा की तहें बिछी हैं। गिन्नूर गढ़, भोजपुर और चौकीगढ़ इस ज़िले के प्रसिद्ध नगर हैं।

अहमदपुर का पुराना नाम देवीपुरा है। यहां तहसील, डाक घर, स्कूल और यूनानी दवाखाना है।

अमरावद नरवर से ४ मील पश्चिम की ओर है। यहां एक प्राचीन सुन्दर मन्दिर के खंडहर है।

आंवली घाट नर्मदा के किनारे स्थित है। यहाँ सोमवती अमावस्या को मेला लगता है।

आसापुरी दक्षिणी जिले की ताल तहसील का एक गांव है। यहाँ एक बाराह मूर्ति है। पास ही प्राचीन मन्दिर के खंडहर हैं। यहीं आसापुरी देवी की मूर्ति और शान्तिनाथ का जैन मन्दिर है

अष्टा इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह पार्वती नदी के पूर्वी किनारे पर समुद्र-तल से १६६७ फुट की उँचाई पर स्थित है। उज्जैन और देवास से सीहोर को जाने वाली पक्की सड़क यहां होकर जाती है। यह देवास से ४२ मील और सीहोर स्टेशन से २८ मील दूर है। यह इस जिले का सब से बड़ा नगर है। इसकी जनसंख्या लगभग ६,००० है। १६३४ ई० में यहाँ ओरछा के राजा और खान जमां की सेनाओं में युद्ध हुआ था। जब यहां दोस्त मुहम्मद खाँ का अधिकार हुआ तो उसने मुरावर गांव के एक

मन्दिर का सामान लेकर यहां किला बनवाया। आगे चल कर यहां मरहठों का अधिकार हो गया और १८१७ ई० तक यहां उन्हीं का अधिकार बना रहा।

अष्टा अफीम और अनाज के व्यापार की बड़ी मंडी है। यहां से यह सामान सीहोर को जाता है। यहां का पानी रंगाई के लिये बड़ा अच्छा है। आल रंगने का काम होता है। यहां थाना डाक घर और अस्पताल है। यहां बारहवीं शताब्दी का एक अधूरा मन्दिर है। मन्दिर के पास ही जैन तीर्थङ्करों की मूर्तियाँ हैं। भोजपुर के पास राजा भोज को बनवाई हुई विशाल झील थी। (१५०५-३४) में मालवा के होशङ्गशाह ने इसके बांध को नष्ट कर दिया। बांध तोड़ने में तीन महीने लगे थे। गोंड लोगों में एक कहावत है:—

ताल तो भूपाल ताल और सब तलैयां।
रानी तो कमलापति और सब रनैयां।
गढ़ तो चित्तौरगढ़ और सब गढ़ैया।
राजा तो रामचन्द्र और सब रजैया॥

भूपाल इस राज्य का प्रधान नगर है। यह समुद्र-

तल से १६५२ फुट ऊँची एक पहाड़ी पर बसा है। यह नगर ८ वर्ग मील के घेरे से बसा है। यह नगर वास्तव में दो तालों (झीलों) के किनारे पर स्थित है। पुख्ता पुल तालाब के ऊपर पत्थर का बना है। बड़ा तालाब पूर्व की ओर है। तालाब के किनारे से ५०० फुट की ऊँची पहाड़ी तक भूपाल नगर के भवन जीने के आकार के बने हैं। नगर का दृश्य बड़ा सुन्दर है। नगर के मध्य में जामा मस्जिद है। इसका रंग कुछ लाल है। गुम्बद सुनहले हैं दो तालाबों के बीच में विशाल बांध है। इस पर सफेद महलों का समूह है। पश्चिम की ओर दोस्त मुहम्मद का बनवाया हुआ फतेह गढ़ (किला) स्थित है। नगर में दुहरी चारदीवारी है। भीतरी चारदीवारी के भीतर शहर खास या पुराना शहर है। शहर की तलहटी में तो ताल है। जिन्हें धार के राजा भोज के एक मन्त्री ने बनवाया था। दूसरा बांध १७६४ में बनवाया गया। बड़ा ताल सवा दो वर्ग मील है। छोटा ताल चौथाई वर्ग मील है। कहते हैं यह नगर उस स्थान पर बसा है जहां राजा भोज ने अपना नगर बसाया था। पुराना किला भी उसने बनवाया

था। इसी से शहर का यह भाग भोजपुर कहलाता है। राजा उदयादित्य परमार की रानी ने यहाँ ११८४ में सभा मण्डल मन्दिर बनवाया था। मन्दिर के ही स्थान पर इस समय जामा मस्जिद खड़ी है। १७२२ ई० में दोस्त मुहम्मद खाँ ने यहाँ फतेहगढ़ का किला बनवाया। फतेहगढ़ किला और बाला किला बड़े ताल के उत्तर में स्थित है। इसमें इस समय बारूद घर है। यहीं ६ पुरानी तोपें रक्खी हुई हैं। नगर में १६४ मस्जिदें हैं इनमें ११० को राज्य से सहायता मिलती है। शहर के भीतर और पड़ोस में कई बाग हैं। इनमें ऐश बाग, फरहत अफज़ा बाग और नूर बाग प्रधान हैं। वज़ीर बाग में वज़ीर मुहम्मद खाँ और उसके बेटे नज़र मुहम्मद खाँ के मकबरे हैं। शहर के निचले भागों में खेती भी होती है। शहर में सूती कपड़ा बुनने, रंगने और छापने का काम होता है। यहाँ गुटका भी बनाया जाता है जो पान के साथ मिला कर बहुत खाया जाता है। शहर में छः चौकी हैं। प्रत्येक चौकी में कई मुहल्ले हैं। चौकी जहाँगीराबाद में फौज रहती है। चौकी इमाम बाड़ा में डाक और तार घर है। चौकी तलैया में सेन्ट्रल पुलिस

स्टेशन है और परी घाट है। यहीं मन्दिर कमाली में योगियों की समाधियाँ हैं।

भूपाल शहर शिक्षा का केन्द्र है। यहां एक सरदार स्कूल है। जिसमें सरदारों के लड़के पढ़ते हैं। एक हाई स्कूल और कई प्राइवेट स्कूल हैं। लड़कियों की शिक्षा के लिये भी कई स्कूल हैं। शहर में कई अस्पताल और शफाखाना हैं।

भूपाल ग्रेट इंडियन पेनिन्सुला रेलवे और भूपाल-उज्जैन रेलवे का जंकशन है।

चैतपुर या चैनपुर बारी क्युलारी नाले पर स्थित है। पहले यहाँ एक गोंड राजा की राजधानी थी फिर भूपाल राज्य के निर्माता दोस्त मुहम्मद खाँ ने इस पर अपना अधिकार कर लिया।

चखल्दी दक्षिणी जिले में कोलार नदी के किनारे पर स्थित है। कहते हैं राजा भोज के समय में यह एक प्रधान नगर था और चम्पावती नाम से प्रसिद्ध था।

चान्दपुर दक्षिणी ज़िले में चांदपुर तहसील का केन्द्र स्थान है। यह पालकमती और चमरसेल नालों के बीच

में स्थित है। यहां तहसील, थाना, स्कूल और यूनानी दवाखाना है।

चौकी गढ़—यह गढ़ चाँदपुर तहसील में १७६९ फुट ऊँची पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। इसके चारों ओर घना जङ्गल है। इस समय भी यहाँ कुछ पुराने भवन और एक बाउली शेष है। सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में यहां गोंड राजा राज्य करते थे।

छातेर गाँव दक्षिणी ज़िले में एक व्यापारिक केन्द्र है। यहां बाज़ार लगता है।

छिपानेर—मुगलकाल में यह हंडिया सरकार की राजधानी था। यहां स्कूल, डाक घर, थाना और सायर नाका है।

चिचली—दक्षिणी जिले में चिचली (शाहगञ्ज) तहसील का प्रधान नगर है। यह नर्मदा नदी के किनारे स्थित है। यह होशङ्गाबाद रेलवे स्टेशन से ७ मील दूर है। यहां तहसील, थाना, डाक घर उर्दू-हिन्दी स्कूल और अस्पताल है। इस नगर की जनसंख्या लगभग ४,००० है।

चुनेतिया—पूर्वी जिले की सिलवानी तहसील में एक बड़ा गाँव है। यह एक व्यापार केन्द्र है। सप्ताह में एक बार बाजार लगता है।

देउरी—दक्षिणी जिले में इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यहाँ तहसील, थाना, डाक घर और यूनानी दवाखाना है। पड़ोस की पहाड़ी पर पुराने खंडहर हैं। यहां सरौता अच्छे बनते हैं। यहां बँगला पान भी अच्छे होते हैं।

दीप—भोजपुर ताल में एक द्वीप था। यह ग्रेट इंडियन पेनिन्सुला रेलवे का स्टेशन है।

दीवानगञ्ज—पूर्वी जिलों में दीवानगञ्ज तहसील का केन्द्र स्थान है। यहाँ तहसील, थाना, उर्दू-हिन्दी स्कूल, डाक घर, यूनानी दवाखाना और रेलवे स्टेशन है।

दोराहा—पश्चिमी ज़िले में इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। बौद्धकाल में एक प्रसिद्ध श्रावस्ता को मार्ग यहां हो कर जाता था। उस समय इसका नाम गोनाधा था। दो भागों के मिलने से इसका नाम

दोराहा पड़ गया। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, स्कूल और यूनानी दवाखाना है।

दोबो—शाहगञ्ज तहसील का एक बड़ा गांव है। यहां प्रति सप्ताह एक बड़ा बाज़ार लगता है जिसमें गाय बैल और दूसरे सामान की बिक्री होती है।

गढ़ी—इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। कुछ समय तक इसका नाम इस्लामगढ़ पड़ा। यहां एक पुराना किला (गढ़) है जिसमें तहसील और थाना है। यहां डाक घर और उर्दू-हिन्दी स्कूल है।

ग़ैरतगञ्ज—इसी नाम की तहसील का प्रधान नगर है। इसे ग़ैरत खां ने बसाया था। यहां तहसील, थाना, डाकघर और हिन्दी-उर्दू स्कूल है।

गिन्नोरगढ़—यह किला मरदान तहसील में १२३० गज़ लम्बी और १५० गज़ चौड़ी अकेली पहाड़ी पर बना है। इसके चारों ओर गहरे खड्ड हैं। पास ही अशरफी पहाड़ी है। पहले यह गोंड राजा के अधिकार में था फिर दोस्त मुहम्मद खां ने इसे छीन लिया।

गोकुलपुर—सेवाँस तहसील का एक छोटा गाँव

है। कार्तिक मास में यहाँ एक मेला लगता है। इसके पास ही एक ताल और पुराने किले के खंडहर हैं।

गुञ्जारी घाट—नर्मदा के किनारे एक उजड़ा हुआ गांव है। कार्तिक की अमावस्या को यहां मेला लगता है।

हरदोत—गढ़ी तहसील में एक व्यापार केन्द्र है।

इछावर—इसी नाम की तहसील का केन्द्र-स्थान है। यह सीहोर से १३ मील और भूपाल से ५६ मील पर है। यह उस स्थान पर बसा है जहां पहले लक्ष्मीपुर था। यहां गोंड राजा राज्य करते थे। १५६४ ई० में अकबर ने इसे छीन लिया। यह स्थान और समीपवर्ती भाग कुछ समय तक एक फ्रांसीसी परिवार की जागीर रहा।

इस्लाम नगर—भूपाल शहर से ६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित है। यह पहले जगदीशपुर कहलाता था। यहाँ देउ राजपूतों की राजधानी थी। एक बार यहाँ के राजपूत वृद्ध पुरुषों और स्त्री बच्चों को छोड़ कर बाहर लड़ने चले गये। जब भूपाल राज्य के

संस्थापक दोस्त मुहम्मद को इसका पता लगा तो उसने १७०६ ई० में कुछ सिपाहियों को इकट्ठा करके तहल नदी के किनारे डेरा डाला। फिर उसने सन्देश भेजा कि मैं जगदीश ठाकुर से मिलना चाहता हूँ। दूसरे दिन राजपूत उससे मिलने आये। दोस्त मुहम्मद खाँ ने उनका बड़ा स्वागत किया और मित्र भाव दिखला कर उन्हें बिठलाया। कुछ समय उनसे बात करने के बाद दोस्त मुहम्मद डेरे के बाद बाहर गया और इत्र-पान मँगवाया। वास्तव में यह उसके बाहर छिपे हुये सिपाहियों के लिये संकेत था। उन्होंने डेरे के रस्से काट दिये और राजपूतों को मार डाला। उनकी लाशें इकट्ठी करके नदी में डाल दी गईं। उस समय से इसका नाम हलाली नदी पड़ गया। फिर दोस्त मुहम्मद ने जगदीशपुर छीन लिया और वहाँ एक किला बनवाया। यहीं उसने अपने नये राज्य की राजधानी बनाई। १७२२ ई० तक यहीं राजधानी रही। इसके बाद भूपाल शहर की नींव पड़ी। १८०६ ई० में सिन्धिया का इस किले पर अधिकार हो गया। १८१८ ई० में ब्रिटिश सरकार ने इसे फिर भूपाल राज्य को सौंप दिया।

यहाँ तहसील, थाना, डाकखाना, स्कूल और यूनानी दवाखाना है।

जेठारी—पूर्वी जिले में इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यहाँ तहसील, थाना, डाकखाना और यूनानी दवाखाना है।

जामगढ़—बरेली तहसील का एक छोटा गाँव है। यहाँ बारहवीं शताब्दी का बना हुआ एक पुराना जैन मन्दिर है।

जावर—इसी नाम की तहसील, का केन्द्र स्थान है। यहाँ तहसील, थाना, डाकखाना, स्कूल और यूनानी दवाखाना है।

कालियाखेरी—दक्षिणी जिले और ताल तहसील का केन्द्र-स्थान है। यह पुराना ताल (झील) की तली में स्थित है। यह जिले और तहसील की कचहरी, थाना, स्कूल, डाकखाना, अस्पताल और यूनानी दवा-खाना है। गाँव के पास ही दो ताल हैं। यहाँ से हिरानिया स्टेशन को ६ मील लम्बी पक्की सड़क जाती है।

केतुभान—दक्षिणी ज़िले का एक प्रसिद्ध गाँव है। यहाँ पौष और माघ में मेला लगता है। इस मेले में पशुओं की बिक्री बहुत होती है।

कुन्दारी—पूर्वी ज़िले की बम्होरी तहसील का एक बड़ा गाँव है। यहाँ कातिक मास में एक बड़ा मेला लगता है।

लादकोर्ड गाँव—दक्षिणी ज़िले की छिपानेर तहसील में एक व्यापार-केन्द्र है।

महलपुर—पूर्वी ज़िले में गढ़ी तहसील का एक छोटा गाँव है। गाँव से कुछ दूर जङ्गल में एक विशाल जैन मूर्ति खड़ी है। सम्भव है पहले यहाँ एक मन्दिर रहा हो। जिस समूचे पत्थर की यह मूर्ति बनी है वह दो मील की दूरी से लाया गया। पास ही एक जीर्ण किला है इसमें हिन्दू और जैन भग्नावशेष हैं।

मर्दानपुर—इसी नाम की तहसील का केन्द्र-स्थान है और नर्मदा के किनारे स्थित है। यहाँ तहसील, थाना, स्कूल और यूनानी दवाखाना है। रेहटी में डाकखाना है।

भूपाल-दर्शन

नरवर—(बृजेश नगर) पूर्वी ज़िले में रैसीन तहसील का एक बड़ा गाँव है। यहाँ से ४ मील की दूरी पर एक प्राचीन हिन्दू मन्दिर था। यहाँ कई भग्नाव-शेष हैं। यही ४ फुट ऊँची एक समूचे पत्थर की गढ़ी हुई बड़ी सुन्दर मूर्ति मिली। कहते हैं एक टीले की चोटी पर पीर महराज रहते हैं। उनको प्रसन्न करने के लिये मिट्टी के घोड़े चढ़ाये जाते हैं। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही उन्हें मानते हैं।

रैसेन—पूर्वी ज़िले में रैसेन तहसील का केन्द्र स्थान है। यह भूपाल शहर से २२ मील और सलामतपुर रेलवे स्टेशन से १२½ मील दूर है। स्टेशन तक पक्की सड़क जाती है। रैसेन का किला समुद्र-तल से १६८० फुट ऊँची पहाड़ी पर बना है।

नगर—पहाड़ी की तलहटी में बसा है। रैसेन नगर पूर्वी जिले और रैसेन नगर का केन्द्र स्थान है। रैसेन का किला भारत के प्रसिद्ध किलों में एक था। रैसेन नाम राजवासिनी का अपभ्रंश है। कुछ लोगों का अनुमान है यह नाम इसके संस्थापक राय सिंह का

स्मारक है। १२३५ ई० में यहाँ अल्तमश का अधिकार हो गया। १२६३ ई० में अलाउद्दीन खिलजी ने इसे छीन लिया। पन्द्रहवीं शताब्दी में मालवा के सुल्तानों का यहाँ अड्डा था। १५२० ई० में यह राजपूतों के हाथ आया। १५३२ ई० में गुजरात के बहादुरशाह ने इस पर आक्रमण किया रानी दुर्गावती ने ७०० राजपूत स्त्रियों के साथ चिता में जल कर भस्म हो गई राजपूत सिपाही रण में लड़ते हुये मारे गये। फिर भी कुछ ही समय में यहाँ राजपूतों का फिर अधिकार हो गया। १५४३ ई० में शेर शाह ने इस किले पर घेरा डाला इस समय यहाँ राजा पूरनमल का अधिकार था। घेरा ६ महीने तक पड़ा रहा। अन्त में पूरनमल ने इस शर्त पर किला खाली कर दिया कि किले के लोगों को कोई कष्ट न पहुँचाया जाय। पर मुल्लाओं के कहने पर शेरशाह ने अपना बचन भंग कर दिया। पूरनमल के डेरे पर धावा बोल दिया गया। राजपूतों ने अपनी स्त्रियों के सतीत्व को बचाने के लिये पहले उनके सिर काट डाले फिर वे सब के सब लड़ते हुये वीर गति को प्राप्त हुये। शेरशाह ने रैसेन ने अपना प्रधान किला

बनाया। यहाँ उनने १००० तोपें रक्खीं। अकबर के समय में रैसेन उज्जैन सूबे की एक सरकार की राजधानी रही। १७६६ ई० में कुछ समय के लिये यह किला बाला राव इंगलिया को मिल गया था।

इस किले के चारों ओर पत्थर की मज़बूत चारदीवारी है। इसमें ६ द्वार हैं। किले के भीतर ४८ कुएँ और ४ ताल हैं। दीवारों पर अनेक हिन्दू शिला लेख हैं। दो फारसी में लेख खुदे हुये हैं। रैसेन नगर में जिले और तहसील की कचहरी, थाना, डाकखाना, स्कूल यूनानी दवाखाना है।

रामगढ़—पूर्वी जिले में इस समय एक उजड़ा हुआ गाँव है। गोंड राजाओं के समय में यह एक प्रसिद्ध नगर था। यहाँ एक पुराने किले के खंडहर हैं।

साँची—यह प्राचीन स्थान भिलसा से ५½ मील की दूरी पर ग्रेट इंडियन पेनिन्सुला रेलवे का एक स्टेशन है। भिल्सा और साँची के बीच में बहुत से बौद्ध कालीन भग्नावशेष है। सांची के अतिरिक्त सोनारी, सतधार, भोजपुर और अन्धेर में भी बौद्धकालीन

भग्नावशेष पाये गये। साँची गाँव चपटी चोटी वाली पहाड़ी की तलहटी में स्थित है। यह पहाड़ी मैदान के ऊपर ३०० फुट ऊँची उठी हुई है। चपटी चोटी के मध्यवर्ती भाग में प्रधान भग्नावशेष है।

साँची का प्रधान स्तूप चोटी के मध्य भाग में स्थित है और दूर से दिखाई देता है। इसके पास ही छोटा स्तूप, चैत्य भवन और दूसरे भग्नावशेष हैं। यह एक वृत्त का एक भाग है और सब कहीं ठोस है और लाल पत्थर का बना है। तली में इसका व्यास ११० फुट है। इसके बाहर की ओर ५½ फुट चौड़ा मार्ग है। स्तूप की चोटी चपटी है। पहले इसके ऊपर शिखर बना था। इसकी ऊँचाई ७७½ फुट थी। इसके चारों ओर ११ फुट ऊँचे विशाल पत्थरों का घेरा है। इसमें चार कामदार द्वार हैं। उत्तर और दक्षिण की ओर अशोक के शिलालेख थे। द्वार के भीतर की ओर ध्यानी बुद्ध की मूर्ति है।

कहते हैं यह स्तूप बुद्ध से २५० वर्ष पूर्व बनाये गये। चैत्यगिर या बसन्त नगर (बेश नगर) के स्तूपों में अशोक का उस समय का उल्लेख है। जब वह उज्जैन

का शासक था। इलाहाबाद और सारनाथ के स्तम्भों की तरह यहाँ भी एक स्तम्भ का खंड मिला है।

सीहोर पश्चिमी जिले में इसी नाम की तहसील का केन्द्र-स्थान है। यहाँ ब्रिटिश छावनी है। यह स्थान समुद्र-तल से १७५० फुट की ऊँचाई पर बसा है और भूपाल-उज्जैन रेलवे का स्टेशन है। इसके पास ही सिवान और लोटिया नाम की दो छोटी नदियाँ मिलती हैं। यहाँ एक छोटा किला है जिसमें आज कल थाना और तहसील है। इसके पास ही एक मस्जिद है जो प्राचीन हिन्दू मन्दिर के स्थान पर बनाई गई। कहते हैं। १३३२ ई० में यह बनाई गई। १८६४ ई० में सिकन्दर बेगम ने इसकी मरम्मत की।

पिंडारी युद्ध के बाद १८१८ ई० में ब्रिटिश सीहोर की नींव पड़ी। कुछ ही समय में यहाँ का व्यापार बढ़ गया और दिसम्बर में हरदौल मेला लगने लगा।

१८१८ ई० की सन्धि

यह सन्धि ईस्ट इण्डिया कम्पिनी और भूपाल के

नवाब नज़र मुहम्मद खाँ के बीच में हुई थी। इसमें ११ निम्न शर्तें थीं:—

(१) ईस्ट इण्डिया कम्पिनी और भूपाल के नवाब तथा उसके उत्तराधिकारियों के बीच में सदा मित्रता, सहायता और एकता का भाव रहेगा। एक के शत्रु और मित्र दोनों के शत्रु और मित्र समझे जायेंगे।

(२) ब्रिटिश सरकार भूपाल राज्य की रक्षा करने का बचन देती है।

(३) भूपाल का नवाब और उसके उत्तराधिकारी ब्रिटिश सरकार का प्रभुत्व स्वीकार करेंगे और अधीनता पूर्वक सहयोग प्रदान करेंगे। वे दूसरे राज्यों और शासकों से कोई सम्बन्ध न रक्खेंगे।

(४) नवाब ब्रिटिश सरकार की अनुमति बिना किसी राज्य या शासक से सन्धि न करेंगे। पर अपने पड़ोसी जमींदारों, मित्रों और सम्बन्धियों से साधारण मामलों के सम्बन्ध में पत्र व्यवहार करते रहेंगे।

(५) नवाब और उसके उत्तराधिकारी किसी पर आक्रमण न करेंगे। यदि कोई झगड़ा होगा तो उसका निर्णय ब्रिटिश सरकार पर छोड़ दिया जायगा।

(६) ब्रिटिश सरकार की सेवा के लिये भूपाल राज्य ६०० घुड़सवार और ४०० पैदल सेना देता रहेगा। जब कभी और जहाँ कहीं आवश्यकता होगी भूपाल की समस्त सेना ब्रिटिश सेना का साथ देगी। जो सिपाही राज्य में शान्ति रखने के लिये आवश्यक होंगे वे न जायँगे।

(७) ब्रिटिश सेना भूपाल राज्य में सदा प्रवेश कर सकेगी। सेनापति उस बात का ध्यान रक्खेंगे कि फसलों को हानि न पहुँचे। आवश्यकता पड़ने पर ब्रिटिश सेना भूपाल राज्य में पड़ाव डालेगी। ऐसी दशा में भूपाल का नवाब ब्रिटिश सरकार को नज़र गढ़ या गुल गाँव को दे देगा और किले से २,००० दूरी तक सब भूमि सौंप देगा।

(८) नवाब और उसके उत्तराधिकारी ब्रिटिश सेना को रसद प्राप्त करने में सभी प्रकार की सहायता देंगे। जो रसद इस राज्य में मोल ली जायगी। या यहाँ हो कर निकलेगी। उस पर किसी प्रकार की चुङ्गी नहीं लगाई जायगी।

(९) नवाब और उसके उत्तराधिकारी अपने राज्य

के शासक बने रहेंगे। ब्रिटिश राज्य की शासन व्यवस्था भूपाल राज्य में न लाई जायगी।

(१०) नवाब ने पिंडारी युद्ध में जिस जोश और स्वामि भक्ति के साथ ब्रिटिश सरकार की सहायता की उसके पुरस्कार में ब्रिटिश सरकार नवाब और उसके उत्तराधिकारियों को सदा के लिये अष्टा, जहावर, सीहोर, दोराहा और देवीपुर के पाँच महाल प्रदान करती है।

(११) यह ११ शर्तों की यह सन्धि रैसेन में १८१८ ई० की २६ फर्वरी को प्रथम बार तैयार हुई। ८ मार्च को कम्पिनी की मुहर के साथ लार्ड हेस्टिंग्स के इस पर हस्ताक्षर हुये।

सौलत नवाब इफ्तखारुल-मुल्क मुहम्मद हमीद उल्ला खाँ बहादुर,
जी० सी० आई० ई०, सी० वी० ओ० नवाब भोपाल

भोपाल
मील
०
३२
बेरसिया
भिलसा
भोपाल
साँची
रायसेन
सिहोर
ऊँप
इछावर
देवरी
बारी
नर्मदा नदी
होशंगाबाद
रेहटी
इटारसी
पिपरिया
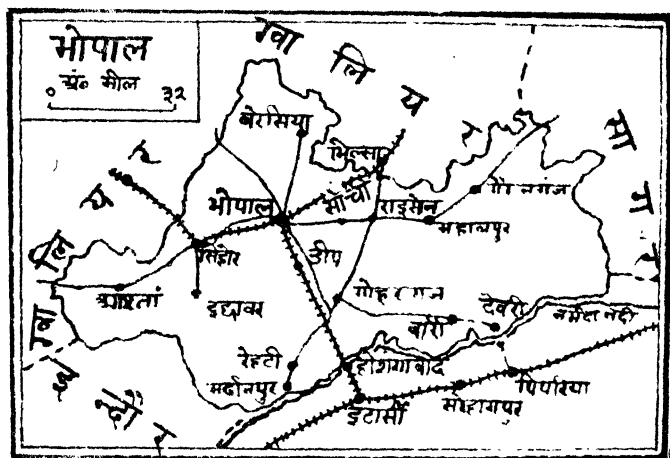
देश दर्शन

पुस्तकाकार सचित्र मासिक पत्र

देश-दर्शन में प्रति मास किसी एक देश का सर्वाङ्ग पूर्ण वर्णन रहता है। लेख प्रायः यात्रा के आधार पर लिखे जाते हैं। आवश्यक नकशों और चित्रों के होने से देश-दर्शन का प्रत्येक अङ्क पढ़ने और संग्रह करने योग्य होता है।

मार्च १९३९ से जनवरी १९४५ तक देश-दर्शन के निम्नाङ्क प्रकाशित हो चुके हैं:—प्रत्येक अंक का मूल्य ।≈) है।

लङ्का, इराक, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र भाग १, मिस्र भाग २, फिनलैंड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेनमार्क, हालैंड, रूस, थाई (श्याम) देश, बल्गेरिया, अल्सेस लारेन, काश्मीर, जापान, ग्वालियर, स्वीडन, मलय-प्रदेश, फिलीपाइन, तीर्थ दर्शन, हवाई द्वीपसमूह, न्यूज़ीलैंड, न्यूगिनी, आस्ट्रेलिया, मेडेगास्कर, न्यूयार्क, सिरिया, फ्रांस, अल्जीरिया, मरक्को, इटली, ट्युनिस, आयरलैंड, अन्वेषक दर्शन भाग १,२,३, नैपाल, स्विट्ज़रलैण्ड, आगरा, अरब, कनाडा, मेवाड़, मेक्सिको, इङ्गलैंड, स्वास्थ्य, पनामा, इन्दौर, पेरोग्वे, जबलपुर, काकेशिया, रीवां, बर्लिन और मालाबार.....

'भूगोल'-कार्यालय ककरहाघाट, इलाहाबाद।